सूरः फ़तह़ की खूबियाँ

इस सूरे मुबार्का में बे शुमार खूबियां हैं मुख़बिरे सादिक़ हज़रत जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपनी जान व माल और इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त चाहता है वह इस सूरे मुबार्का को पढ़े और जो शख़्स इस सुरह को पढ़ता रहेगा तो हश्र के दिन ख़ुदावन्दे आलम उससे फ़रमायेगा कि तू मेरा बन्दा है और फ़रिश्तों को हुकम होगा कि इसको ख़ास बन्दों में शामिल कर दो नीज़ इसको बहिश्त की नेअमतों से बहरा मन्द और शराबे तुहूर से सेराब करो।

सूरः फ़तह़

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

सूरः फ़तह़

इन्ना फ-तह्ना ल-क फत्हम
(ऐ रसूल यह सुलह हुदेबिया नहीं बल्कि)
मुबीना० लियग़फ़ि-र-ल-
हमने हक़ीक़तन तुम को खुल्लम खुल्ला
कल्लाहु मा तक़द्द-म मिन
फ़तह अता की ताकि ख़ुदा तुम्हारी उम्मत के
ज़ंबि-क वमा त-अख़्ख़-र व
अगले पिछले गुनाह माफ करदे और तुम पर
युतिम-म् निअ-म् तहु अलै-क
अपनी नेमत पूरे करे और तुम्हें सीधी राह
व यहदी-य-क् सिरात म
पर साबित क़दम रखे, और ख़ुदा तुम्हारी
मुस्तक़ीमा व यंसु-र-कल्लाहु
ज़बरदस्त मदद करे, और वह वही (ख़ुदा)
नस्रन अज़ीज़ा हुवल्लज़ी
तो है जिसने मुमिनीन के दिलों में तसल्ली
अंज़लस्सकीन्-त फी कुलूबिल
नाज़िल फ़रमाई ताकि अपने (पहले) ईमान
मुअमिनीन लियज़दादू ईमानम
के साथ और ईमान को बढ़ायें और सारे

म-अ ईमानिहिम, व
आसमान व ज़मीन के लश्कर तो ख़ुदा ही
ल्लिलाहि जुनूदुस्समावाति वल
के हैं और ख़ुदा बड़ा वाक़िफ़ कार हकीम है,
अर्ज़ि व कानल्लाहु अ़लीमन
ताकि मोमिन मर्द और मोमिना औरतों को
हकीमा० लि युदख़िलल
(बहिश्त) के बागों में जा पहुंचाए, जिन के
मु अमिनी-न वल
नीचे नहरें जारी हैं और वह वहां हमेश रहेंगे
मुअमिनाति जन्नातिन तजरी
और उनके गुनाहों को उनसे दूर कर दे और
मिन तहतिहल अंहारु
यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ी कामयाबी है, और
ख़ालिदी-न फ़ीहा व
मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें और
यु कप्पि फ़ र अ हु म
मुश्रिक मर्द और मुश्रिक औरतों पर ख़ुदा के
सय्यआतिहिम व कान
हक़ में बुरे बुरे ख़्याल रखते हैं अज़ाब

सूरः फ़तह

ज़ालि-क इंदल्लाहि फ़ौज़न
नाज़िल करे उनपर (मुसीबत की) बड़ी
अज़ीमा व युअ़ज़्ज़िबल मुनाफ़ि
गर्दिश है और ख़ुदा उन पर ग़ज़बनाक है
की-न वल मुनाफ़िक़ाति वल
और उसने उन पर लानत की है और उनके
मुश्रिकी-न वल मुश्रिकातिज़
लिए जहन्नम को तय्यार कर रखा है और
ज़न्नी-न बिल्लाहि
वह (क्या) बुरी जगह है, और सारे आसमान
ज़न्नस्सुअ अलैहिम
व ज़मीन के लश्कर ख़ुदा ही के लिए हैं और
दाइ-र-तुस्सौअ व
ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार (और) ग़ालिब
ग़ज़िबल्लाहु अलैहिम व
हिकमत वाला है, (ए रसूल) हमने तुमको
ल-अ-न्हुम व अ-अ़द्-द
(तमाम आलम का) ग्वाह और ख़ुशख़बरी देने
लहुम जहन्नम व साअ़त
वाला और धमकी देने वाला (पैग़म्बर

इन्नमा युबायिअ़ूनलल्लाह०
उस ख़ुदा से अहद किया है पूरा किया तो
यदुल्लाहि फौ-क ऐदीहिम०
उसको अंकरीब ही अज्रे अज़ीम अता
फ़मन न-क-स फ़इन्नमा यंकुसु
फ़रमायेगा जो गंवार दीहाती (हुदेबिया से)
अ़ला नफ़्सिहि व मन औफ़ा
पीछे रह गये अब वह तुम से कहेंगे कि
बिमा अ़ाह-द अ़लैहुल्ला-ह
हमको हमारे माल और लड़के बालों ने रोक
फ़-स-यु अतीहि अजरन
रखा तो आप हमारे वास्ते (ख़ुदा से)
अज़ीमा० स-य-कूलु ल-कल
मग़फ़िरत की दुआ कीजिए यह लोग अपनी
मुख़ल्लफ़ून मिनल अअ़राबि
ज़बान से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिल
श-ग़-लत्ना अम्वालुना व
में नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर
अहलूना फ़स्तग़फ़िर लना
ख़ुदा तुम लोगों को नुक़्सान पहुंचाना चाहे

सूरः फ़तह

मसीरा० व लिल्लाहि जुनूदुस
बनाकर) भेजा ताकि (मुसलमानो) तुम लोग
समावाति वल अर्ज़ि व
और उसके रसूल पर ईमान लाओ और
कानल्लाहु अज़ीज़न हकीमा०
उसकी मदद करो और उसको बुज़ुर्ग समझो
इन्ना अरसलना-क शाहिदौं
और सुबह और शाम उसी की तस्बीह करो,
व मुबश्शरौं व नज़ीरा०
बेशक जो लोग तुमसे बेअत करते हैं वह
लितुअमिनू बिल्लहि व
लोग ख़ुदा ही से बेअत करते हैं ख़ुदा की
रसूलिहि व तुअ़ज़्ज़िरूहु व
कुव्वत व क़ुदरत तो सब की कुव्वत व
तुवक़्क़िरूहु व तुसब्बिहूहु
क़ुदरत पर ग़ालिब है तो जो अहद को
बुक्रतौं व असीला० इन्नल
तोड़ेगा तो अपने नुक़्सान के लिए अहद
लज़ी-न् युबायिअ़ून-क
तोड़ता है, और जिसने इस बात को जिसका

अ-ब-दौं व जुय्यि-न ज़ालि-क
गुमानियां करने लगे थे और (आख़िर कार)
फ़ी क़ुलूबिकुम व ज़ननतुम
तुम लोग आप बर्बाद हुए और जो शख़्स
ज़न्नस्सौअि व कुंतुम क़ौमम
ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान न लाये
बूरा० व मल लम यूअमिम
तो हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए जहन्नम
बिल्लाहि व रसूलिहि फ़इन्ना
की आग तय्यार कर रखी है, और सारे
अअ़तद-ना लिलकाफ़िरीन्
आसमान व ज़मीन की बादशाहत ख़ुदा ही
सअ़ीरा व-लिल्लाहि मुल्कुस्समा
की है जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे
वाति वल अर्ज़ि यग़फ़िरु
सज़ा दे और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला
लिमैंय यशाअु व युअ़ज़्ज़िबु
मेहरबान है (मुसलमानो) अब जो तुम (ख़ैबर
मैंय यशा० व कानल्लाहु ग़फ़ूर
की) ग़नीमतों के लेने को जाने लगोगे तो जो

सूरः फ़तह

यकूलू-न बि अल्सि-नतिहिम
या तुम्हें फ़ायदा पहुंचाने का इरादा करे तो
मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहि० कुल
ख़ुदा के मुक़ाबले तुम्हारे लिए किसका बस
फ़मैंय यमलिकु लकुम
चल सकता है बल्कि जो कुछ तुम कर रहे
मिनल्लाहि शैअन इन
हो ख़ुदा इससे ख़ूब वाक़िफ़ है (यह सब
अरा-द बिकुम ज़र्रन औ अरा-द
तुम्हारे हीले हैं) बात यह है कि तुम यह
बिकुम नफ़्अन बल
समझे बैठे थे कि रसूल और मोमिनीन हर
कानल्लाहु बिमा तअ़मलून्
गिज़ कभी अपने लड़के बालों में पलट कर
ख़ाबीरा० बल ज़ननतुम अल
आने ही के नहीं (और सब मार डाले जायेंगे)
लैंय यंक़लिबर्रसुलु वल
और यही बात तुम्हारे दिलों में खप गई थी
मूअमिनू-न इला अहलीहिम
और (इसी वजह से) तुम तरह तरह की बद

कुल लिल मुख़ल्लफ़ी-न
एक सख़्त जंगजू कौम के (साथ लड़ने के)
मिनल अअ़राबि स-तुदऔ-न
लिए बुलाये जाओगे कि तुम (या तो) उनसे
इला क़ौमिन उलि बअसिन
लड़ते ही रहोगे या वह मुसलमान ही हो
शदीदिन तुक़ातिलू-न-हुम औ
जायेंगे पस अगर तुम (ख़ुदा का) हुकम
युसलिमून० फ़-इन तुतीअू
मानोगे तो ख़ुदा तुमको अच्छा बदला देगा
युअ़ति कुमुल्लाहु अज्रन
और अगर तुमने जिस तरह पहली दफ़्आ
ह-स-ना० व इन त-तवल्लौ
सरताबी की थी अब भी सरताबी करोगे तो
कमा तवल्लैतुम मिन क़ब्लु
तुमको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा
युअ़ज्ज़िब्कुम अज़ाबन अ़लीमा०
(जिहाद से पीछे रह जाने का) न तो अंधे पर
लै-स अ़ल्ल अ़अमा
कुछ गुनाह है और न लंगड़े पर गुनाह है

सूरः फ़तह

रहीमा० स-यकुलुल मुख़ल-
लोग (हुदेबिया से) पीछे रह गये थे तुमसे
लफ़ू-न इज़न तलक़्तुम इला
कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो यह
मग़ानि-म लितअ-ख़ुजूहा ज़रूना
चाहते हैं कि ख़ुदा के क़ौल को बदल दें,
नत-तबिअ्कुम युरीदू-न अैंय
तुम (साफ़) कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे
युबद्दिलू कलामल्लाहि कुल
साथ नहीं चलने पाओगे ख़ुदा ने पहले ही से
लन तत्तबिअूना कज़ालिकुम
ऐसा फ़रमा दिया है कि यह लोग कहेंगे कि
क़ालल्लाहु मिन क़ब्लु
तुम लोग तो हम से हसद रखते हो (ख़ुदा
फ़-स यकूलू-न बल
ऐसा किया कहेगा) बात यह है कि यह लोग
तहसदून-ना बल कानू ला
बहुत ही कम समझते हैं, जो गंवार पीछे रह
यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला०
गये थे उनसे कह दो कि अंक़रीब ही तुम

युबायिअून-क तह़तश्श-ज-र-ति
लिया फिर उन पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई
फ अ़लि-म मा फ़ी कुलूबिहिम
और उन्हें इस के इवज़ में बहुत जल्द फ़तह
फअंज़-लस्सकी-न-त अ़लैहिम
इनायत की (और इसके इलावह) बहुत सी
व असाबहुम फ़त्हन क़रीबा०
ग़नीमतें (भी) जो उन्होंने हासिल की (अता
व मग़ानि-म कसीरतन
फ़रमायी) और ख़ुदा तो ग़ालिब (और)
यअखुजू-न-हा व कानल्लाहु
हिकमत वाला है, ख़ुदा ने तुमसे बहुत सी
अज़ीज़न हकीमा० व-अ-द
ग़नीमतों का वादा फ़रमाया था कि तुम उन
कुमुल्लाहु मग़ानि-म
पर क़ाबिज़ हो गये तो इसके बदले तुम्हें यह
कसीरतन तअखुजू-न-हा
(ख़ैबर की ग़नीमत) जल्दी से दिलवादी और
फअज्ज-ल ल-कुम हाज़िहि व
(हुदेबिया से) लोगों की दस्त दराज़ी को

सूरः फ़तह

ह-र-जुन वला अ़लल
और न बीमार पर गुनाह है और जो शख़्स
अअ़रजि ह-र-जुन वला
ख़ुदा और उसके रसूल का हुकम मानेगा तो
अ़लल मरीज़ि ह-र-जुव व
वह उसको (बेहिश्त के) उन सदा बहार बागों
मैंय युतिअल्ला- ह व
में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी
रसूल-हु युद-खिल्हु
होंगी और जो सरताबी करेगा वह उसको
जन्नातिन तजरी मिन
दर्दनाक़ अज़ाब की सजा देगा, जिस वक़्त
तह़तिहल अंहारु व मैंय
मोमिनीन तुम से दरख़्त के नीचे (लड़ने
य-त-वल-ल युअ़ज्जिबहु
मरने) की बेअत कर रहे थे तो ख़ुदा उनसे
अज़ाबन अ़लीमा० लक़द
(इस बात पर) ज़रूर ख़ुश हुआ ग़र्ज़ जो
रज़ियल्लाहु अ़निल मुअमिनी-न इज़
कुछ उनके दिलों में था ख़ुदा ने उसे देख

नसीरा सुन्नतल लाहिल्लती
पहले से चली आती है और तुम ख़ुदा की
क़द ख़ालत मिन क़ब्लु व
आदत को बदलते न देखोगे और वही तो है
लन तजि़-द लि सुन्नतिल्लाहि
जिसने तुमको उन कुफ़्फ़ार पर फ़तह देने के
तबदीला० व हुवल लज़ी
बाद मक्का की सरहद में उनके हाथ तुमसे
कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम अंकुम व
और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये और तुम
ऐदि-यकुम अ़न्हुम बि बत्नि
लोग जो कुछ भी करते थे ख़ुदा उसे देख
मक-क-त मिम बअ़दि अन
रहा था, यह वही लोग तो हैं जिन्होंने कुफ़्र
अज़्फ़-र-कुम अलैहिम व
किया और तुमको मस्जिदुल हराम में जाने
कानलल्लाहु बिमा तअ़मलू-न
से रोका और क़ुरबानी के जानवरों को भी
बसीरा० हुमुल्लज़ी-न क-फ़-रू
(न आने दिया) कि वह अपनी (मुक़र्रर) जगह

सूः फ़तह

कफ़्-फ़ ऐदियन्नासि अंकुम व
तुमसे रोक दिया और गर्ज यह थी कि यह
लि-त-कू-न आय-तल लिल
मोमिनीन के लिए (क़ुदरत का) नमूना हो
मुअमिनी-न सिरातम
और ख़ुदा तुमको सीधी राह पर ले चले,
मुस्तक़ीमा० व उख़्रा लम
और दूसरी (ग़नीमतें भी दीं) जिन पर तुम
तक़्दिरू अलैहा क़द अह़ातल्लाहु बिहा
क़ुदरत नहीं रखते थे (और) ख़ुदा ही उन
व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन
पर हावी था और ख़ुदा तो हर चीज पर
क़दीरा व लौ-का-त-ल
क़ादिर है, अगर कुफ़्फ़ार तुमसे लड़ते तो
कुमुल्लज़ी-न क-फ़-रू ल
जरूर पीठ फेर कर भाग जाते फ़िर न
वल्ल-वुल अदबा-र सुम-म
(अपना) किसी को सरपरस्त ही पाते और न
ला यजिदू-न वलिय्यौं वला
ही मददगार, यही ख़ुदा की आदत है जो

लौ तज़य्य-लू ल-अज़्ज़ब-
लोग काफिर थे हम उन्हें दर्दनाक अज़ाब
नल्ल-ज़ी-न क-फ़-रू मिन्हुम
की ज़रूर सजा देते (यह वह वक़्त था) जब
अ़ज़ाबन अ़लीमा० इज़
काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद ठान ली थी
जअ़-लल्ल-ज़ी-न क-फ़-रू फ़ी
और ज़िद भी जाहिलीय्यत की सी तो ख़ुदा
क़ुलूबिहिमुल हमिय्य-त
ने अपने रसूल और मोमिनीन (के दिलों) पर
हमीय्य-तल जाहि-लिय्य-ति
अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमाई और
फ़ अंज-लल्लाहु स-कीन-त-हु
उनको परहेज़गारी की बात पर क़ायम रखा
अ़ला रसूलिहि व अ़लल
और यह लोग उसी के सजावार और अहल
मुअमि-नी-न व अल्ज़-म-
भी थे और ख़ुदा तो हर चीज़ से खबरदार
हुम कलिम-तत्क़्वा व कानू
है, बेशक ख़ुदा ने अपने रसूल को सच्चा

सूरः फ़तह

व सद्दूकुम अनिल
(में) पहुंचने से रूके रहे और अगर कुछ ऐसे
मस्जिदिल हरामि वल हद-य
ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें न होतीं
मअ़कूफ़न अैयं यबलु-ग़
जिनसे तुम वाक़िफ़ न थे कि तुम उनको
महिल्लहु व लौ ला रिजालुम
(लड़ाई में कुफ़्फ़ार के साथ) पामाल कर
मुअमिनू-न व निसाउम-
डालते पस तुमको उनकी तरफ़ से बे ख़बरी
मुमिनातुल लम् तअ़ल-मूहुम
में नुक़्सान पहुंच जाता (तो उसी वक़्त)
अन त-तऊहुम फ़ तुसीबकुम
तुमको फ़तह होती मगर ताख़ीर इस लिए
मिन्हुम म-अर्र-तुम बिग़ैरि
(हुई) कि ख़ुदा जिसे चाहे अपनी रहमत में
अ़ल्मिन लि युद-ख़ि-लल्लाहु
दाख़िल करे और अगर वह (ईमानदार
फ़ी रह्म-ति-हि मैंय यशाअु
कुफ़्फ़ार से) अलग हो जाते तो उनमें से जो

फ-ज-अ-ल मिन दूनि ज़ालि-क
तमाम दीनों पर ग़ालिब रखे और ग्वाही के
फ़त्ह़न क़रीबा० हुवल्लज़ी
लिए तो बस ख़ुदा काफ़ी है, (हज़रत)
अर-स-ल रसूल-हु बिल हुदा
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व
व दीनिल ह़क़्क़ि लि
सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग
युज़्हिर-हु अलद् दी-नि
उनके साथ हैं काफ़िरों पर बड़े सख़्त और
कुल्लि-हि व कफ़ा बिल्लाहि
आपस में बड़े रहम दिल हैं तू उनको देखेगा
शहीदा० मुह़म्मदुर रसूलुल्लाह०
(कि ख़ुदा के सामने) झुके सर ब सुजूद हैं
वल्ल-ज़ी-न म-अ़ हु
ख़ुदा के फ़ज़ल और उसकी ख़ुश्नूदी के
अशिद्दाअु अ़लल कुफ्फ़ारि
ख़्वास्तगार हैं कसरते सुजूद के असर से
रुहुमाअु बै-न-हुम तराहुम
उनकी पेशानियों पर घट्टे पड़े हुए हैं यही

सूरः फ़त्ह

अ-हक़्क़-बिहा व अह्ल-हा
मुताबिक़े वाकिआ ख़्वाब दिखाया था कि तुम
व कानल्लाहु बि-कुल्लि शैइंन
लोग इंशाअल्लाह मस्जिदुल हराम में अपने
अ़लीमा० ल-क़द स-द-क़ल्लाहु
सर मुंडा कर और अपने थोड़े से बाल
रसूल-हुर रुअया बिल ह़क़्क़ि
कतरवाकर बहुत अम्न व इतमीनान से
ल तदख़ुलूनल मस्जिदल
दाखिल होगे (और) किसी तरह का ख़ौफ़ न
हरा-म इंशाअल्लाहु
करोगे तो जो बात तुम नहीं जानते उसको
आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न
मालूम थी तो उसने फ़त्ह मक्का के पहले
रुऊ सकुम व मुक़स्सिरी-न
ही बहुत जल्द फ़तर (ख़ैबर) अता की, वह
ला तख़ाफ़ू-न फ़
वही तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत
अ़लिमल्लाहु मा लम तअ़लमू
और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको

स्वक्क-अन सुज्जदैंय तस्तगू-न
औसाफ़ उनके तौरेत में भी हैं और यही
फ़ज़्लम मिनल्लाहि व रिज़्वाना०
हालात इंजील में (मज़्कूर) हैं। गोया वह
सीमाहुम फ़ी वुजूहिहिम मिन
एक ऐसी खेती है कि जिसने (पहले ज़मीन
अ-स-रिस्सुजूदि ज़ालि-क म-स-लुहुम
से) अपनी मोटी सूई निकाली फिर (अज़्जाए
फ़ित्तौराति व म-स-लुहुम फ़िल
ज़मीन को ग़िज़ा बना कर) उसी सूई को
इंजीलि क-ज़रइन अख़र-ज
मज़बूत किया तो मोटी हुई फिर अपनी जड़
शत्अहु फ़ आज़-र-हु फ़स्तग्ल-ज
पर सीधी खड़ी हो गई और अपनी ताज़गी
फ़स्तवा अ़ला सूक़िहि
के किसानों को ख़ुश करने लगी (और इतनी
युअ्जिबुज़्ज़ुर्राअ लि यग़ी-ज़
जल्दी तरक़्क़ी इस लिए दी) ताकि उनके
बिहिमुल कुफ़्फ़ा-र
ज़रिया काफ़िरों की जी जलाये। जो लोग

सूरः फ़त्ह

वअ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व
ईमान लाये और (अच्छे) काम करते रहे ख़ुदा
अ़मिलुस्सालिहा-ति मिन्हुम
ने उनसे बख़्शिश और अज्रे अज़ीम का वादा
मग़्फ़िरतौं व अज्रन अज़ीमा०
किया है।